६. नाट्य

स्वगत

स्वगत

एक ही पात्र द्‌वारा व्यक्ति, प्राणी, पंछी, फूल, सजीव या निर्जीव घटकों के आत्मचरित्र का निर्वाह करना ‘स्वगत’ कहलाता है ।

पेड़ का स्वगत

“मैं पेड़ हूँ । आप मुझे वृक्ष भी कहते हैं । आप जैसे किसी बालक ने ही मुझे विद्‌यालय के परिसर में लगाया था । बहुत ही ध्यान रखते हुए उसने मेरा संवर्धन किया । मेरे चारों ओर ‘ट्री गार्ड’ लगाकर उसने मेरी रक्षा की थी । (हँसता है)

आज मैं बड़ा हो गया हूँ । मैं आप सभी को परछाई देता हूँ । फल देता हूँ । इतना ही नहीं बल्कि बारिश में आप सभी मेरा आश्रय लेते हैं । एक बार किसी ने मेरे शरीर पर कुल्हाड़ी का प्रहार किया (रोता है) । मुझे बहुत पीड़ा हुई । मेरा रक्त भी बहा। आप गोंद के रूप में उपयोग में लाते हैं ना.....!

आपने हमें कितना कष्ट पहुँचाया परंतु हम कभी भी प्रतिशोध नहीं लेते । इसके विपरीत हम आपको फूल, फल, लकड़ी, गोंद, शहद, मोम, लाख, छाया, हवा तथा औषधियाँ देते हैं ।

इसलिए मुझे जिलाओ । मुझे बचाओ । मैं बचूँगा तभी पर्यावरण सुरक्षित रहेगा अन्यथा सब कुछ समाप्त हो जाएगा सदा के लिए ।”

- पत्थर का मंतव्य, मैं पेड़ बोल रहा, नेता का स्वगत, केले का स्वगत, वन फूल, जादूगर, राक्षस, परी जैसे विभिन्न विषयों पर स्वगत तैयार करें तथा विद्‌यार्थियों को अभ्यास हेतु दें ।

एकल नाट्य अभिनय

एकल नाट्य अभिनय

जब एक ही पात्र रंगमंच पर अन्य पात्रों से संवाद करता है, तब अन्य पात्रों का रंगमंच पर केवल होने का आभास करवाया जाता है, इसी को एकल नाट्य छटा का प्रस्तुतीकरण कहा जाता है ।

'दादी'

(रंगमंच पर खड़ा एक पात्र) (दर्शकों की ओर देखते हुए) अरे, आ गए तुम सभी ! मैं दादी, तुम्हारी ही प्रतीक्षा कर रही थी । क्योंकि तुम्हें बहुत कुछ बताना है । (विंग की ओर देखते हुए) क्यों? क्यों न बताऊँ? तुम चुप रहो । (दर्शकों की ओर) यह देखिए (दर्शकों की ओर) चुप रहिए ना आप बात न करूँ? (दर्शकों की ओर) मैंने आज बहुत अध्ययन किया है । इसीलिए तो मुझे नयी-नयी बातें सीखने को मिलीं । (दूसरे विंग की ओर देखकर) तुम्हें भी पता नहीं होंगी; वैसी ज्ञान और पर्यावरण की बातें मैं जान गई हूँ ।

(शून्य नजर से एक कोने की ओर देखते हुए) क्यों ना हो! .... अध्ययन चाहे किसी भी विषय का हो, हमें समृद्ध बनाता है । अध्ययन के कारण ही नये युग की, नयी- प्राचीन संस्कृति की, स्वास्थ्य तथा विज्ञान की जानकारी प्राप्त होती है ।

हमारा आचरण कैसा हो, इसका बोध अध्ययन से ही होता है । अध्ययन से एकाग्रता, चिंतन-मनन बढ़ता है तथा हमारी बुद्धि अच्छे कार्यों के लिए विकसित होती है ।

(दर्शकों से) तो फिर, करोगे ना तुम भी अध्ययन !

मेरी कृति :

- तुम कौन-सी एकल नाट्य छटा का प्रस्तुतीकरण करोगे, वह लिखो ।

....

....

....

....

....

◆ विद्यार्थियों से विभिन्न विषयों पर एकल नाट्य छटा तैयार करने के लिए कहें । स्वर में आरोह-अवरोह, हाव-भाव उत्पन्न करने के विषय में मार्गदर्शन करें ।

रंगभूषा और वेशभूषा

रंगभूषा और वेशभूषा

नाटक का मंचन करने से पूर्व पात्रों का चयन किया जाता है। इसमें पात्र की आयु, पोशाक तथा चेहरे पर लगा दाग, घाव का चिह्न, दाँतों की रचना, बाल आदि बातें नाटक की प्रस्तुति को प्रभावित करती हैं। अत: प्रस्तुति के अनुसार पात्रों की रंगभूषा व वेशभूषा की जाती है ।

जैसे - वृद्‌ध दादा- दादी की भूमिका करते समय पात्र के चेहरे पर झुर्रियाँ, सफेद बाल, दादा जी का गंजा सिर तथा कपड़े आदि बातों को ध्यान में रखना पड़ता है ।

मेरी कृति :

- कुछ रंगभूषाएँ व वेशभूषाएँ देखो और चर्चा करो ।

- विभिन्न वेशभूषाएँ व रंगभूषाएँ तैयार करवा लें । जैसे - अंग्रेज अधिकारी, सैनिक, विदूषक (मसखरा), मछुवारा, लकड़हारा, सिपाही आदि ।

नेपथ्य

नेपथ्य (दृश्य निर्माण)

नाटक में रंगमंच पर उद्‌यान, घर, वन, गाँव के मकान, गोठ आदि स्थान दर्शाने हेतु नेपथ्य का विचार किया जाता है और उन स्थानों के अनुसार नेपथ्य की रचना की जाती है । बड़े-बड़े नाटकों में नेपथ्य के सेट खड़े किए जाते हैं। जैसे-गाँव में घर का नेपथ्य ।

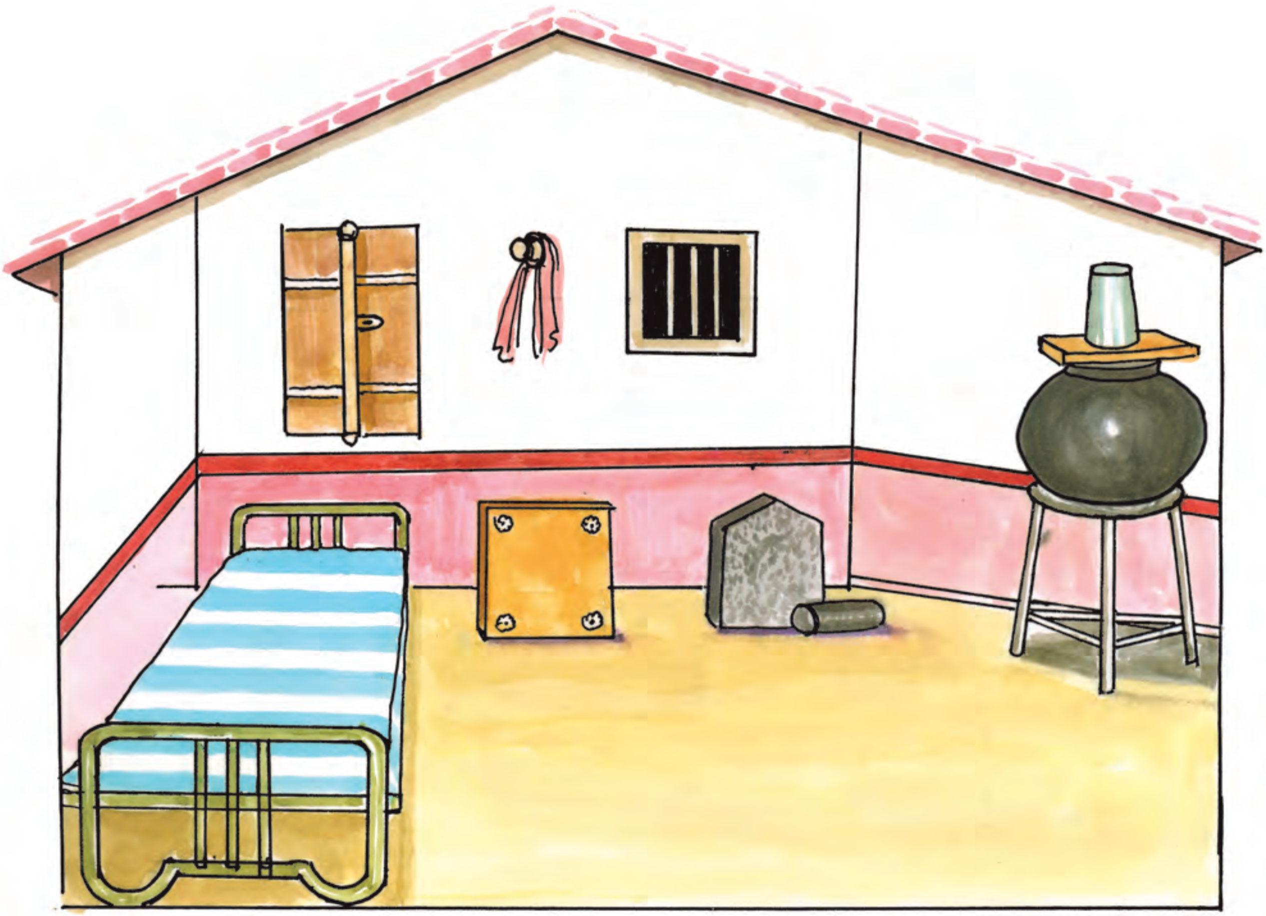

मेरी कृति :

- ऊपरी नेपथ्य सेट में कौन-कौन -सी वस्तुएँ दिखाई देती हैं; वह लिखो । इन वस्तुओं के अतिरिक्त अन्य कौन-सी वस्तुएँ रख सकते हैं, इसका विचार करो और लिखो ।

....

....

....

◆ विद्‌यालय, घर, उद्‌यान, होटल, बंगला, वन आदि का नेपथ्य के रूप में उपयोग कर नाटक को प्रस्तुत करें । परिसर में सहज उपलब्ध होगी, ऐसी नि:शुल्क / सस्ती एवं पर्यावरणपूरक सामग्री का उपयोग करके नेपथ्य की रचना करें ।

मूक अभिनय

संवाद के अभाव में हाथ द्वारा की गई विभिन्न मुद्राएँ, संकेत, हावभाव, इशारे, चेहरे के भाव एवं कृति अथवा अभिनय को 'मूक अभिनय' कहते हैं ।

मेरी कृति :

- मूक अभिनय के रूप में गरम चाय पीना, पानी में चलना, सुई में धागा पिरोना, काँटा चुभना, डॉक्टर द्वारा इंजेक्शन लगवाना आदि कृतियाँ करें ।

◆ विद्‌यार्थियों द्‌वारा विभिन्न मूक अभिनय करवा लें । संभव हो तो फिल्म दिखाएँ ।